# भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में शल्य चिकित्सा एवं पशु पुनरूत्पादन विभाग द्वारा "पशु शल्य चिकित्सा एवं प्रसूतिशास्त्र" विषय पर 6 दिवसीय रिफ्रेशर पाठ्यक्रम आरम्भ

बरेली, 14 जनवरी। आज भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर में शल्य चिकित्सा एवं पशु पुनरूत्पादन विभाग द्वारा "पशु शल्य चिकित्सा एवं प्रसूतिशास्त्र" विषय पर 6 दिवसीय रिफ्रेशर पाठ्यक्रम आरम्भ हुआ। यह पाठ्यक्रम उत्तर पद्रेश पशु चिकित्सा परिषद द्वारा प्रायोजित किया गया है इसमें उत्तर प्रदेश के 10 पशुचिकित्साधिकारी भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर उपरोक्त विषय से सम्बन्धित कम्पेडियम का भी मुख्य अतिथि तथा संकाय सदस्यों द्वारा विमोचन किया गया।उद्घाटन अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि एवं संस्थान के संयुक्त निदेशक, शोध डा. बी. पी. मिश्रा ने कहा कि पशुचिकित्सकों के लिए इस तरह के रिफ्रेशर पाठ्यक्रम बहुत ही आवश्यक हैं क्योंकि पशुचिकित्सकों को पशु रोगों से सम्बन्धित नई-नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और ऐसे में यह पाठ्यक्रम काफी सहायक होते हैं क्योंकि इन पाठ्यक्रमों में नवीन जानकारियों के साथ-साथ तकनीकों का प्रदर्शन भी कराया जाता है। उन्होंने उत्तर प्रदेश पशुचिकित्सा परिषद की पाठ्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए सराहना की। उन्होंने पशु चिकित्साधिकारियों का आव्हान किया कि आप यहाँ से अर्जित ज्ञान का प्रयोग अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर अवश्य करें। साथ ही पाठ्यक्रम से सम्बन्धित फीड बैक अवश्य दें।शल्य चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष एवं पाठ्यक्रम निदेशक डा. अमर पाल ने इस अवसर पर बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश के पशुचिकित्सकों के लिए तैयार किया गया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पशुचिकित्सकों को शल्य क्रिया के साथ-साथ प्रसूतिज्ञान के बारे में प्रशिक्षण दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम तीन दिन शल्य क्रिया तथा शेष 3 दिन प्रसूति विज्ञान के बारे में बताया जायेगा। प्रशिक्षण के विषय को फील्ड में आने वाली पशु रोगों की समस्याओं के अनुरूप डिजाइन किया गया है।इस अवसर पर पशु पुनरूत्पादन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. हरेन्द्र कुमार ने कहा कि गाइनकोलोजी के क्षेत्र में बहुत से अनुसंधान विगत वर्षों में किये गये हैं तथा कई नैदानिक विकसित किये गये हैं जिनके बारे में पशुचिकित्साधिकारियों को बताया जायेगा। उन्होंने बताया कि पशुओं में बांझपन एक गंभीर समस्या है जिसके निदान के लिए हमें सही नैदानिकों का चुनाव करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षुओं को एण्टी माइक्रोबियल प्रतिरोधी तथा फीटल लुबरेकटर के बारे में भी जानकारी दी जायेगी।कार्यक्रम का संचालन शल्य चिकित्सा विभाग के डा. अभिषेक सक्सेना द्वारा किया गया जबकि धन्यवाद

ज्ञापन डा. एम.के पात्रा द्वारा किया गया। इस अवसर पर डा. नवीन कुमार,डा. संजीव मेहरोत्रा, डा. एस. महमूद, डा. एम. हक, डा. रेखा पाठक सहित संस्थान के बी.वी.एस.सी के छात्र एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।